RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 December 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd December 2019

मासिक पत्रिका

# अजायब ✲ बानी

वर्ष : सत्रहवां
अंक : आठवां
दिसम्बर : 2019

| | |
|---|---|
| एक शब्द | 4 |
| परमात्मा की याद | 5 |
| दिल का हुजरा साफ कर | 9 |
| अमृतवेला | 33 |


**संपादक** : प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71
80 79 08 46 01

**उप संपादक** : नन्दनी

**विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

**स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक** : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 213 - मूल्य - पाँच रुपये

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

# ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां जी

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां जी,
उम्रां तां लंघ चलियां दाता जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

1. दुःख विछोड़े दा बहुत सतोंदा वे, (2)
सोहणया दर्श बिना चैन नहीं ओंदा वे, (2)
बह जा सामणें तूं इक वारी आके जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

2. दर्द विछोड़ा अज किने साल होए वे, (2)
जांणदा ऐं तेरे बाजों किना अस्सी रोए वे, (2)
हुण हिम्मतां ने तेरे बाजों हारियां जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

3. तेरे ही विछोड़े वाली अग्ग मैं तां सेकदी, (2)
बैठ तेरे दर उत्ते तेरा ही राह देखदी, (2)
कीते वादेयां नूं आप निभा जा जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

4. मसां मसां जिंदड़ी तें प्यार विच रंगी वे, (2)
जापदा है जन्मा तों तेरे नाल मंगी वे, (2)
बण सजण तूं डोली मेरी चा जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

5. समझ यतीम दाता तूं ही गल लाया सी, (2)
प्यार वाला बीज दाता आप तूं लगाया सी, (2)
दर्श तेरे बिना रूह मुरझावे जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

6. प्यार दा पुजारी दाता अजायब जी सदावें तूं, (2)
सागर प्यार दा कृपाल जिनूं गावें तूं, (2)
ओसे प्यार नूं 'गुरमेल' कुरलावे जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

# परमात्मा की याद

परमात्मा के पास वापिस जाने वाले मार्ग को पाने के लिए परमात्मा की याद ही हमारे लिए अहम है। भक्ति के सभी अभ्यास, पूजा करने के स्थान व तीर्थ यात्राओं का भी यही मक़सद है लेकिन मानव देह परमात्मा का सच्चा मंदिर है।

अलग-अलग धर्मग्रंथों में निर्धारित किए गए भक्ति करने के अनेकों तरीकों का एक और सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि परमात्मा को कैसे याद किया जाए? अलग-अलग समय में अलग-अलग जगहों से आए हुए विभिन्न लेखकों ने अपने-अपने अंदाज में सन्त मार्ग को परमात्मा की ओर ले जाने वाला मार्ग कहा है। हम इसे धनुर्विद्या का खेल भी कह सकते हैं जिसमें बहुत से धनुर्धर हिस्सा लेते हैं और एक ही लक्ष्य पर अपने-अपने तीर चलाते हैं।

एक हिन्दुस्तानी सन्त ने कहा है, ''हर एक अपने अंदाज में हमसे अपने प्यारे की बात करता है। निशाना एक है लेकिन तीर चलाने वाले अनगिनत हैं।'' पवित्र कुरान में कहा गया है कि समय-समय पर परमात्मा द्वारा भेजे हुए सन्तों ने जिस जगह पर वह रहते थे उसके अनुसार इबादत के तरीके प्रस्तुत किए हैं।

एक महान फ़ारसी सूफ़ी शायर उमर ख्य्याम ने कहा है, ''मंदिर, मस्जिद व चर्च परमात्मा की भक्ति के लिए एक समान हैं। घंटा व शंख जीवन के संगीत में जोर पैदा करते हैं। मस्जिद की मेहराब, चर्च का क्रॉस, मंदिर की वेदी और यहूदियों के प्रार्थना भवन के चिराग़ केवल उस प्यारे परमात्मा की भक्ति के चिन्ह हैं।''

परमात्मा की इबाबत का चाहे कोई भी आकार क्यों न हो उसे अपने आप किसी भी पवित्र स्थान पर जाकर नहीं पाया जा सकता। उसे पाने के लिए मानव देह की प्रयोगशाला जोकि वास्तव में परमात्मा का मंदिर है उसमें दाखिल होना पड़ेगा। सच्ची पूजा व भक्ति शुद्ध रूप से एक आंतरिक व मानसिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया का इंसानी शरीर के बाहर की किसी भी वस्तु से कोई वास्ता नहीं केवल मन की पवित्रता की ही जरूरत है।

हम परमात्मा की भक्ति इस नीले आसमान के नीचे कहीं भी कर सकते हैं क्योंकि सारी दुनिया परमात्मा का विशाल मंदिर है। परमात्मा के बगैर कोई भी जगह खाली नहीं ऊपर जो इबादत की खास जगह बताई गई हैं वे भी इनमें शामिल हैं। असल में जहाँ भी भक्ति नम्रता से झुकती है वह जगह पवित्र हो जाती है।

पवित्र कुरान में कहा गया है कि सारी सृष्टि उस परमात्मा की है। पूर्व या पश्चिम हर जगह हमारा मुख परमात्मा की ओर है क्योंकि परमात्मा सर्वव्यापक है। अनजान लोगों के लिए परमात्मा केवल इंसानों द्वारा बनाए गए मंदिर, मस्जिद या चर्चों में रहता है लेकिन जागृत लोग परमात्मा को अपने अंदर इंसानी देह रूपी मंदिर में पाते हैं।

अल निसाई साहब ने पुष्टि की है, ''मेरे लिए पूरी दुनिया ही पवित्र मस्जिद है जहाँ भी नमाज का निर्धारित समय हो जाए मेरे अनुयायी वहाँ उसी वक्त नमाज पढ़ सकते हैं। जहाँ भक्ति की जाती है वे सब जगह पवित्र हैं।''

मघरबी साहब कहते हैं, ''आपका प्रीतम आपके अंदर है लेकिन आप उससे अनजान हैं और उसे बाहर जगह-जगह ढूँढने जाते हैं। जो मेरी रूह की रूह है उसकी तलाश में मस्जिद जाना

समय की बर्बादी है। अनजान व्यक्ति मस्जिद के आगे झुकते हैं लेकिन समझदार व्यक्ति अपने मन को साफ करने में लगे हुए हैं। जो परमात्मा को बाहर ढूँढते हैं वे दिखावा करते हैं और जो उसे अंदर ढूँढ़ते हैं वे दिखावा नहीं करते। सच्चा काबा या पूजा के काबिल सतगुरु है, वह ऐसी शख्सियत है जिसमें परमात्मा का नूर रोशन है। तुलसी साहब कहते हैंः

*नकली मंदिर मस्जिदों में जाये सद अफ़सोस है।*
*कुदरती मस्जिद का साकिन दुःख उठाने के लिए।।*

कबीर साहब भी ऐसा ही कहते हैं कि जब मैं हज के लिए मक्का जा रहा था तब रास्ते में मुझे परमात्मा मिला। परमात्मा ने मुझे डाँटते हुए कहा, ''तुमसे यह किसने कहा है कि परमात्मा वहाँ है यहाँ नहीं है।''

गुरु अमरदास जी कहते हैं, ''यह देह परमात्मा का सच्चा मंदिर है, इसमें परमात्मा की ज्याति चमक रही है। परमात्मा की आत्मा आपमें रहती है।''

शिराज़ हाफ़िज़ ने भी उसी तरह कहा है, ''ऐ खुदा! मेरा मंदिर या मस्जिद जाने का मकसद केवल तुझसे मिलना है इसके सिवाय और कोई ख्याल नहीं, असल में वही जगह उत्तम है जहाँ कोई अपने प्रीतम की शान का दीदार करता है।''

सिक्खों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी ने स्पष्ट रूप से ऐसा कहा है, ''मस्जिद में नमाज और डेरे में पूजा से कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि दोनों का एक ही मकसद है।''

मुसलमानों का अल्लाह और हिन्दुओं का अलख एक ही हस्ती के नाम हैं। पुराण और कुरान केवल उसी की बात करते हैं।

असल में संसार के सभी धर्म एक ही वास्तविकता की ओर इशारा करते हैं। सभी धर्मग्रंथ कहते हैं कि परमात्मा को बाहर खोजना किसी काम का नहीं। गुरु या सन्त की कृपा से परमात्मा को अपने अंदर प्रकट किया जा सकता है। इबादत करने के सभी स्थान जहाँ कहीं भी हो पानी और मिट्टी से बने हैं। जब परमात्मा सर्वव्यापक है तो हम उसे मंदिरों और मस्जिदों में क्यों खोजते हैं?

रामानन्द कहते हैं कि परमात्मा हमारे अंदर है। वह हमारी रूह की भी रूह है हम उसी में जीते हैं और हमारा जीवन उसी में है लेकिन यह सच्चाई तभी प्रकट होती है जब सन्त-सतगुरु असली अनुभव के जरिए हमें हमारे अंदर परमात्मा दिखा देते हैं।

जब मुझे उसकी शान अपने अंदर दिखती है तो मैं कहीं क्यों जाऊँ? जो मन उसमें रच गया है उसे अब और कोई लगाव नहीं है। एक दिन परमात्मा की चाह में मैंने चंदन का लेप बनाया और ब्रह्म के निवास की ओर चल पड़ा तब सतगुरु ने मुझसे कहा कि वह तो तेरे मन की तह में है।

मैं जहाँ भी जाता हूँ मिट्टी और पानी से बने हुए मकान देखता हूँ लेकिन मैं तुझे हर वस्तु में देखता हूँ। मैंने तुझे वेद और पुराणों में खोजा मैं कहीं क्यों भटकूँ जब तू यहीं है?

ऐ सतगुरु! मैं खुद को तेरे चरणों में मिटा देना चाहता हूँ क्योंकि तूने मुझे सभी भ्रमों से बचाया है और मेरे सभी बंधन काट दिए हैं। रामानन्द अब ब्रह्म में लीन रहता है सतगुरु के वचन ने असंख्य कर्मों को भस्म कर दिया है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

*कोई बोले राम राम, कोई खुदाइ।। कोई सेवै गुसइया कोई अलाहि।।*
*कारण करण करीम।। किरपा धारी रहीम।।*

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# दिल का हुजरा साफ कर

तुलसी साहब की बानी DVD-59 16 पी.एस. राजस्थान आश्रम

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे जब परमात्मा का हुक्म होता है सच्चखंड से इस संसार में आते हैं। वे जिन आत्माओं के लिए संसार में आते हैं बेशक वे आत्माएं उनसे दूर हों या नजदीक हों इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता। वे इतनी समर्था रखते हैं कि उन आत्माओं को शब्द-नाम का भेद देने के लिए वहाँ जाएं या हजारों मील दूर समुद्र पार से भी उन्हें अपने पास खींच लें।

कबीर साहब कहते हैं, ''चाहे शिष्य समुंद्र पार बैठा हो और वे बनारस में बैठे हों इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वे शिष्यों के लिए खास दया लेकर आते हैं।'' सन्त प्रेम रूप होते हैं। वे हर मजहब, हर इंसान के साथ प्यार करते हैं। सन्त-महात्मा चाहे हजारों साल पहले हुए या आज के कमाई वाले महात्मा सब अंदर जाकर परमात्मा के दरबार में एकत्रित होते हैं उनका आपस में प्यार होता है।

गुरु तेगबहादुर साहब आगरा की तरफ गए। वहाँ एक मुसलमान फकीर गुरु साहब से मुलाकात करने के लिए आया। गुरु साहब उसे गले से लगकर मिले। शिष्यों का अभी पर्दा नहीं खुला था उनके दिल में घृणा आई कि गुरु साहब ने एक मुसलमान को गले लगाया है। गुरु साहब समझ गए कि ये दुविधा में पड़ गए हैं इन्हें पता नहीं कि सारे फकीर एक ही मंजिल के राही होते हैं।

गुरु साहब ने शिष्यों से कहा, ''आओ! मैं आपको इस शख्स का किस्सा सुनाऊँ। एक वक्त यह लाहौर का गवर्नर था। इसका

चौथी मंजिल पर निवास था, इसकी सेज को फूलों से सँवारा जाता था। एक योगी उड़ता हुआ इसके महलों के ऊपर से निकलने लगा तो योगी के दिल में ख्याल आया कि सेज सूनी पड़ी है यहाँ थोड़ी देर आराम कर लिया जाए। मेरे पास गुटका है मैं जब चाहूँगा मुँह में गुटका डालकर उड़ जाऊंगा। योगी वहाँ पर आराम करने लगा। बस दो मिनट आराम किया फूलों की महक उसके दिमाग को चढ़ गई थका हुआ था बेहाश हो गया।

जब गवर्नर रात को आराम करने के लिए अपने पलंग के पास पहुँचा तो वह देखता है कि एक गवर्नर के महल में आदमी का क्या काम, यह किस तरह यहाँ आकर सो गया है? खैर! उसने सोचा कि यह भी इंसान है। गवर्नर रहम दिल था उसने योगी को नहीं उठाया। गवर्नर ने आस-पास देखा कि इसे इतनी नींद आई हुई है कि इसे अपना होश नहीं। जो गुटका मुँह में था वह एक तरफ गिर गया। गवर्नर ने गुटका उठाया और एक तरफ होकर बैठ गया। सोचा इसे उठाते नहीं यह अपने आप उठेगा।

सुबह जब योगी की नींद खुली और वह गुटका ढूंढने लगा कि मैं अब उड़ जाऊँ। उड़ने वाली ताकत पास नहीं थी इसलिए वह उड़ न सका। जब योगी ने वहाँ गवर्नर को देखा तो योगी बहुत घबरा गया। वह सोचने लगा कि पता नहीं अब क्या होगा, इसकी सजा फाँसी भी हो सकती है।

गवर्नर रहमदिल था उसने कहा, ''आप घबराए क्यों हैं, क्या आपकी कोई चीज़ गुम हो गई है?'' योगी बोला, ''हाँ जी, गुटका था।'' गवर्नर ने उसे गुटका दिखाया और पूछा, ''क्या यही है?'' योगी बोला, ''हाँ जी यही है।'' गवर्नर ने कहा, ''इसे लो।'' योगी गुटका लेकर उड़ गया।

जब योगी ने जाकर आपने गुरुदेव योगी को बताया कि मेरे साथ लाहौर में इस तरह हुआ। वह रहम दिल गवर्नर बहुत अच्छा है जिसने मेरी जान बख्श दी। उसके गुरु के दिल में ख्याल आया कि मेरे शिष्य ने बहुत कसूर किया है गर्वनर इसका कत्ल भी करवा सकता था जो यह उसके महल में जाकर सो गया।

उस योगी ने अपने साथ कुछ शिष्यों को लिया और कुछ गुटके भी लिए। गर्वनर को मुलाकात की खबर पहले ही भेज दी कि हम आपसे मिलना चाहते हैं। गवर्नर ने उनको टाइम दिया। उन्होंने गर्वनर से मिलकर कहा, ''आपने मेरे इस शिष्य की जान बख्शी है जिसके लिए हम आपसे माफी माँगते हैं और आपका धन्यवाद भी करते हैं। हम आपको तोहफे के रूप में ये गुटके देना चाहते हैं इनसे आप जहाँ भी जाना चाहें उड़कर जा सकते हैं।''

गवर्नर ने यह सुनकर कहा, ''हाय! हाय! आपने सारी जिंदगी भूख-प्यास काटी, रिद्धियों-सिद्धियों में फँसकर क्या हासिल किया? हवा में उड़ते रहे क्या पाया और क्या पा लोगे? मैं लाहौर का गवर्नर हूँ मेरे पास फौजें हैं हर किस्म के साधन हैं, मैं उन पर चढ़कर जा सकता हूँ। क्या आपने इन चीजों के लिए भक्ति की है, क्या यह भक्ति है?'' कबीर साहब कहते हैंः

*पाखंडियाँ नर भोगे चौरासी, खोज करो मन माही रे।*

अगर कोई सात समुंद्र पार से खबर ला दे मैं फिर भी नहीं मानता, कोई आसमान में उड़े मैं फिर भी नहीं मानता क्योंकि पाखंड करने वाला किसी के साथ धोखा करने वाला चौरासी में जाता है। गुरु तेग बहादुर का हर जाति के साथ प्यार था, मौहब्बत थी। हम अपने आपसे तो दावा करते हैं कि हम गुरु साहब को मानते हैं लेकिन हम दूसरी जाति वालों को कहते हैं कि ये अच्छे

नहीं हैं। हम गुरु नानकदेव जी की तालीम को मानते हैं। गुरु नानकदेव जी तो सबके साथ प्यार करना मौहब्बत करना सिखाते हैं। हम सबका परमात्मा एक है, वह दाता है।

गुरु नानकदेव जी एक जगह लिखते हैं कि कोई ऐसा वक्त था जब दुनिया में कुछ भी नहीं था; न कोई पहाड़, न कोई समुंद्र, न कोई खंड और ब्रह्मांड ही था। परमात्मा की मौज हुई तो उसने सच्चखंड की रचना की और नीचे हर एक मंडल की रचना की। इंसान पैदा कर दिए, हर एक चीज़ पैदा कर दी फिर परमात्मा ने सोचा कि अब यह खिलकत कहाँ जाएं? फिर वह देवताओं में देवता बना फिर उसने अपनी ज्योत सन्तों के अंदर रखी कि दुनिया को रोशनी दें और उन्हें जाकर बताएं कि परमात्मा नजदीक से नजदीक आपके अंदर है। दुनिया लुटी जा रही है आखिर इनका ठिकाना सच्चखंड है और इनकी कौम सतनाम है।

परमात्मा खुद इंसान का चोला धारकर इंसान बनकर आता है अगर वह पशु या पक्षी बनता तो हम उसकी बोली न समझ पाते अगर वह देवी-देवता बनता तो हम उसे देख न सकते। इंसान का टीचर इंसान ही होता है। हिन्दु शास्त्रों में लिखा है निगुरे के हाथ का पानी शराब के बराबर माना जाता है। कबीर साहब कहते हैं:

*कबीर निगुरा न मिले, पापी मिले हजार।*
*एक निगुरे की पीठ पर लख पापों का भार।।*

चाहे हजार पापी मिल जाएं निगुरा न मिले क्योंकि निगुरे की पीठ पर पापों का भार होता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

*गुरु मंत्र हीणस जो प्राणी, धगन्त जन्म भृष्टने कूकर सूकर गर्धव खल तुल्हे।*

वह कुत्ते जैसा है, सुअर जैसा है, गधे जैसा है, साँप जैसा है। हमारे गुरु साहब या धर्मशास्त्र इससे ऊपर क्या कह सकते हैं?

धर्मशास्त्रों में लिखा है कि गुरु के बिना आपको रास्ता नहीं मिल सकता, हमें कदम-कदम पर गुरु की जरूरत है। हमने जमींदारा सीखना है तो हमें जमींदारो की सोहबत करनी पड़ती है हालाँकि यह एक मोटा सा काम है अगर हमने सुनार का काम सीखना है तो हमें सुनारों की संगत-सोहबत करनी पड़ती है अगर हमने डॉक्टर बनना है तो डॉक्टरों की संगत-सोहबत करनी पड़ती है।

हम रूहानियत में बिल्कुल अनजान हैं, हमें कुछ भी पता नहीं है कि हमारा रास्ता किस ओर है और हमने कहाँ जाना है? मुस्लमान लोग कहते हैं कि मौहम्मद साहब के बाद कोई गुरु या पीर नहीं हो सकता लेकिन उस पवित्र किताब में लिखा है कि आप किसी औलिया के पास जाएं वह आपके अंदर के कान खोलेगा।

खुदा आपके अंदर है और खुदा ने आपके कानों पर मोहरे लगाई हुई हैं। कोई औलिया पीर ही आपकी मोहरे तोड़ सकता है। जब आपके अंदर के कान खुल जाएँगे तब अंदर की मोहरें टूट जाएँगी और आप अंदर का राग, शब्द सुनने लग जाएंगे। जब आपकी अंदर की आँखें खुल जाएगी तब आप उस नूर और प्रकाश को देखना शुरु कर देंगे। जब अंदर की जुबान खुल जाएगी तब आप उस परमात्मा गुरु के साथ अंदर बातें करने लग जाएंगे।

गुरु ग्रंथ साहब के 1430 पन्ने हैं। जब मैंने बाबा बिशनदास जी से कई प्रश्न किए तो बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''बेटा! जो बात आप लोग पकड़कर बैठे हैं यह बात गुरु ग्रंथ साहब में तो लिखी ही नहीं है।'' मैंने अपने पर ऐतबार नहीं किया मैंने खोज के लिए दो आदमियों को अपने साथ लगाया। हमनें छह महीने तक खोज की। पहले मैं पढ़ता फिर मेरा दूसरा साथी और फिर तीसरा साथी पढ़ता। उस शब्द का हमने छह महीने तक अध्ययन किया।

हम जिस बात को पकड़कर बैठे थे जब वह बात न मिली तब हमने बाबा बिशनदास जी के आगे जाकर गर्दन झुका दी कि महाराज! आप सच्चे हैं और हम झूठे हैं। हमने यह गलती भी तब मानी जब परमात्मा ने हमारे ऊपर दया की। वह बात यह थीः

*एक छोड़ दूजे लग्गे डूबे से बंजारेया।।*

बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''उसमें यह लिखा है'':

*खसम छोड़ दूजे लग्गे डूबे से बंजारेया।।*

खसम परमात्मा है। जो उस परमात्मा को छोड़कर किसी और तरफ जाते हैं उन्हें खसम परमात्मा कैसे मिल सकता है? गुरु नानकदेव जी कहते हैः

*जे सो चँदा उगवे, सूरज चढ़े हजार।*
*ऐते चाँनण होंदया गुरु बिन घोर अंधार।*
*नानक गुरु न चेतनी मन अपने सुचेत।*
*छुट्टे तिल गवाड़ ज्यों सुन्ने अंदर खेत।*
*खेतां अंदर छुट्टिए कहो नानक स्यों नाहें।*
*फलिए फुलिए बपड़े भी तन विच सुआहे।।*

गुरु साहब कहते है जो लोग यह कहते हैं कि हमें किसी गुरु-पीर की जरूरत नहीं है हम बहुत पढ़े-लिखे हैं, वे अपने मन में सचेत हुए बैठे हैं लेकिन आखिरी समय में परमात्मा के दरबार में उनकी हालत कैसी होगी? अब आप जाट के तिल के खेत की मिसाल देते हैं कि जाट तिल के खेत की बुआई करता है उसके अंदर गवार तिल भी पैदा हो जाते हैं उनका कद भी तिल के पौधों की तरह होता है। उन्हें भी फूल लगते हैं डोडियां लगती हैं लेकिन उन डोडियों में राख पैदा होती है दाना या गिरी वैगरहा नहीं होता। जमींदारों को पता है कि इसे काटकर हम क्यों अपना वक्त खराब

करें इसमें से कुछ निकलना तो है नहीं। जमींदार उस गवार तिल के पौधे को खेत में ही छोड़कर आ जाते हैं। इसी तरह मनमुख लोगों के पुत्र-पुत्रियाँ होते हैं धन-दौलत भी होती है वे सुखी भी नजर आते हैं लेकिन सब कुछ होते हुए अगर सतगुरु नहीं मिला नाम नहीं मिला तो आखिरी वक्त में

*खरे परख खजाने पाए खोटे भ्रम भुलामणयां।*

आखिरी समय में हर आत्मा की अच्छी तरह से परख होती है। जो आत्माएं शब्द-नाम से जुड़ी हुई हैं परमात्मा उन्हें सच्चखंड में दाखिल कर लेता है बाकी को रद्द करके इस दुनिया में फिर वापिस भेज देता है। जिस तरह पिछले समय में चाँदी के सिक्के होते थे, जब चाँदी के सिक्को को खजाने में जमा करवाने जाते तो खजांची परखता था। खोटे सिक्के को खजांची टक लगाकर बाहर निकाल देता और खरे सिकके को खजाने में दाखिल कर लेता था।

**इसी तरह अगर हम परमात्मा की भक्ति करते हैं तो परमात्मा हमें मंजूर करता है, अपने खजाने सच्चखंड में जगह देता है अगर हम परमात्मा की भक्ति नहीं करते तो परमात्मा हमें रद्द करके बाहर निकाल देता है फिर इस दुखी दुनिया में चक्कर लगाते रहते हैं। सन्त कहते हैं किसी के साथ न किसी की कौम जाएगी न मजहब जाएगा न ही किसी का मुल्क साथ जाएगा। हमारे साथ जाने वाला नाम, शब्द और गुरु है।** गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*कल्ला आया है कल्ला जाएंगा, दूजा रब है अगर ध्याएँगा।*

अगर किसी से पूछते हैं कि परमात्मा कहाँ है? हम आसमान की ओर हाथ कर देते हैं। सज्जनों! परमात्मा आपके अंदर बैठा है। जिसे परमात्मा मिला है अंदर से मिला है और जिसे मिलेगा अंदर

से ही मिलेगा। आज तक बाहर से किसी को परमात्मा न मिला है और न मिल ही सकता है। परमात्मा ने साधु-सन्तों, ऋषि-मुनियों, पीरों-फकीरों को भेजा कि दुनिया में जाकर मेरी जानकारी दें।

जितने भी ग्रंथ बनाए गए हैं इनमें परमात्मा से मिलने के फायदे बताए गए हैं। हर ग्रंथ में लिखा हुआ है कि सन्त किसी समाज के कैदी नहीं होते। जिन महात्माओं ने अपने अंदर परमात्मा को बसाया होता है वे आपको बताएँगे कि परमात्मा से किस तरह मिलना है? बाहर मंदिर-मस्जिद इसलिए बनाए गए हैं कि किसी न किसी तरह इनका मन परमात्मा की ओर लग जाए।

आप सभी मजहबों का अच्छी तरह से अध्ययन करके देख लें सबके रीति-रिवाज अलग-अलग हैं लेकिन इनकी तह में जो चीज काम करती है वह एक ही है। आप अमृतसर गुरुद्वारे में जाकर देख सकते हैं वहाँ हमेशा अखंड ज्योत जलाई जाती है और नगाड़ा बजाया जाता है। जब हम आम घरों में अखंडपाठ करते है तो ज्योत जलाते हैं। ज्योत को घी की, बत्ती की और ज्योत जलाने वाले की जरूरत पड़ती है, जब घी खत्म हो जाता है तो ज्योत बुझ जाती है।

जब हम बोद्धों के मंदिर में या किसी भी मंदिर में जाते हैं तो सबसे पहले घंटी बजाते हैं। अंदर बाईं ओर ज्योत जल रही होती है उसमें घी, तेल या कोई और रोगन डालना पड़ता है और ज्योत जगाने वाला भी चाहिए। सिक्खों के गुरुद्वारें में नगाड़ा बजाया जाता है मंदिर में शंख बजाया जाता है। मस्जिद में रात को चिरागा करते हैं, मौलवी ऊँची-ऊँची बाँग देता है वे भी नगाड़ा बजाते हैं। इसी तरह जब हम चर्च में जाते हैं सर्विस शुरु होने से पहले घंटा बजाते हैं मोमबत्तियाँ जलाते हैं। आप देखें! हर मजहब के अंदर ज्योत का और उस आवाज का जिक्र आता है।

महात्माओं ने हमें समझाया कि आपके अंदर ज्योत भी है और आवाज भी है। हिन्दु महात्माओं ने इसे राम-नाम, राम-धुन, दिव्यधुनि या आकाशवाणी भी कहा है। गुरु नानकदेव जी महाराज इसे अंतरजोत, निरंतर बाणी कहकर बयान करते हैं कि आप सबके अंदर वह ज्योत है और उसके अंदर बाणी है।

*पूरे गुरु की बाणी सब माहें समाणी, आप सुणी ते आप बखाणी।*

जिस बाणी को पकड़कर आपने मुक्त होना है वह बाणी सबके अंदर समाई हुई है। इसमें किसी कौम का सवाल नहीं औरत-मर्द का सवाल नहीं। महात्मा खुद दिन-रात उस बाणी को सुनता है और हमें उस बाणी के साथ जोड़ता है। कबीर साहब उसे शब्द या नाम कहते हैं। मुस्लमान उसे कलमा, बाँग-ए-असमानी कहते हैं कि सबसे ऊपर का राग यही है, यह मालिक की दरगाह से उठता हुआ हमारी आँखों के पीछे धुनकारे दे रहा है।

सभी महात्माओं ने हमें समझाने के लिए बाहर साधन करके बताए कि कम से कम इनका ख्याल अंदर जाए लेकिन हम बाहरमुखी हो गए। अंदर जाने के लिए सघर्ष करना पड़ता है, खुद मेहनत करनी पड़ती है। बाहर पंडित को बुलाया दस रूपये दिए और उससे धूप बत्ती करवा ली लेकिन ऐसा करने से कुछ नहीं होगा आपने अपने अंदर ज्योत को जगाना है।

जब मौत आती है तब सनातन धर्म के लोग दिया-बत्ती करते हैं। मरने वाले से कहते हैं कि ख्याल ज्योत की तरफ ला। सन्त कहते हैं कि मरते वक्त ज्योत जलाने से कुछ नहीं होता। जीते जी ज्योत के दर्शन करने है ज्योत के अंदर जाना है। पल्टू साहब इस ज्योत का जिक्र करते हैं :

*उल्टा कुआं गगन में तिसमें जरे चिराग, तिसमें जरे चिराग बिन रोगन बिन बाती।*

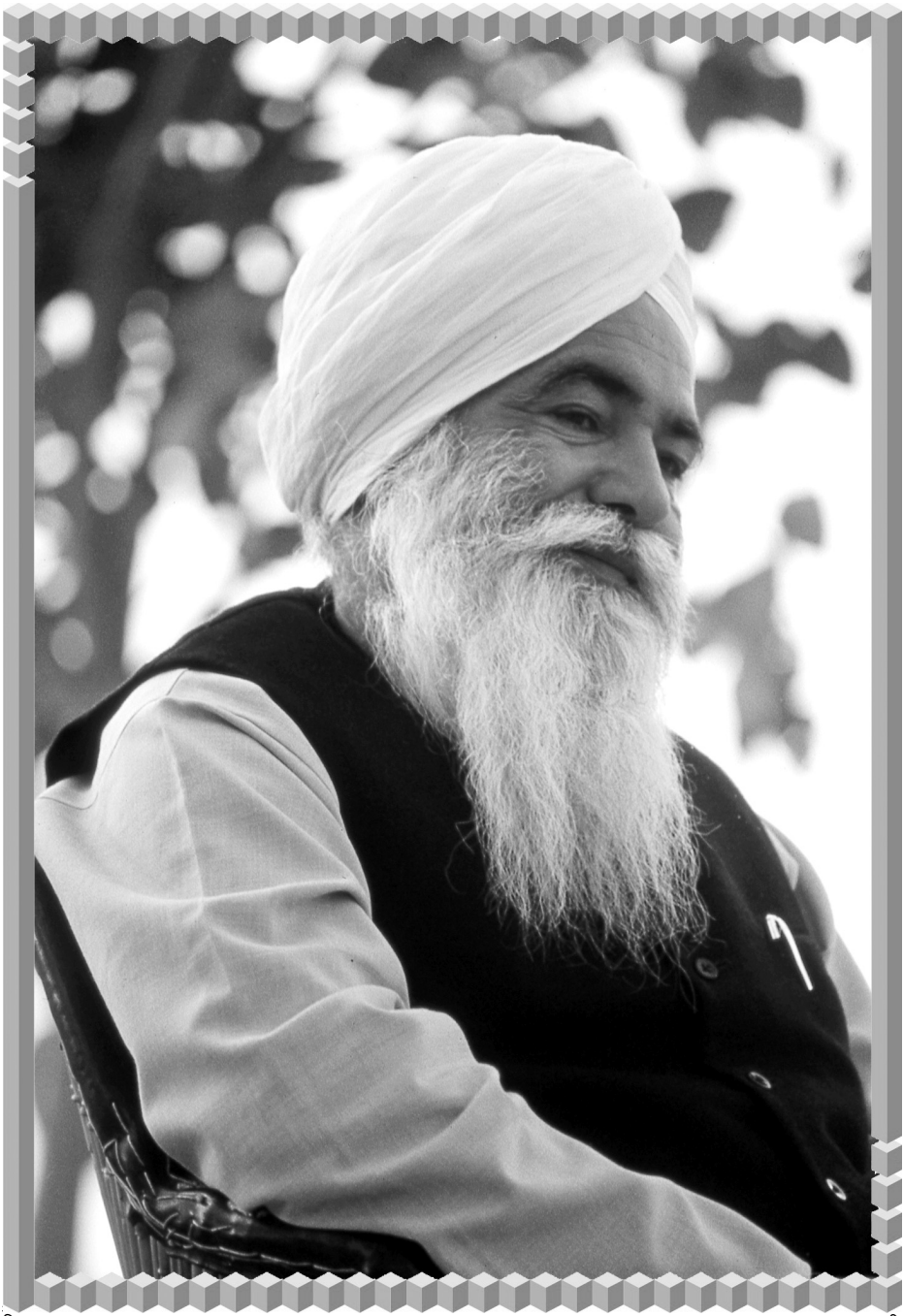

पल्टू साहब इंसान को उल्टा कुआँ कहकर बयान करते हैं। जिस तरह कुएँ की बोटम ऊपर होती है उसी तरह इंसान उल्टा वृक्ष, उल्टा कुआँ है। हमारे माथे के बीच बिना बत्ती और बिना तेल के ज्योत जल रही है। सिर्फ एक किस्म के लोग ही उस ज्योत के दर्शन करते हैं और उस आवाज को सुनते हैं।

जो लोग सन्त-सतगुरु से नाम नहीं लेते या सन्त-सतगुरु के पास जाने की जरूरत महसूस नहीं करते क्या उनमें भी वह ज्योत जलती है? ज्योत तो हर इंसान में जलती है जिस तरह धरती के अंदर सब जगह पानी है लेकिन प्यास उन्हीं की बुझती है जो कुआँ या टयूबवेल लगाकर प्यास बुझा लेते हैं। पल्टू साहब कहते हैंः

*सतगुरु मिले ताहीं की नजर में आवे, बिन सतगुरु को नाहीं जो ताहीं लखावे।*

अगर हमें कोई ऐसा महात्मा मिल जाए जो अंदर जाकर खुद ज्योत के दर्शन करता है और उस आवाज को सुनता है वह हमें उस आवाज के साथ जोड़ देगा और उस ज्योत के दर्शन करवा देगा। कबीर साहब अपनी बानी में जिक्र करते हैंः

*दीवा बले अगम का बिन बत्ती बिन तेल।*

आप सबके अंदर वह दीपक जल रहा है जिसे बत्ती या तेल की जरूरत नहीं है। गुरु रामदास जी महाराज इसका जिक्र करते हैंः

*राम नाम है जोत सवाई, तत गुरुमत काढ लीजे।*

राम नाम की ज्योत हम सबके अंदर है। गुरुमुख लोग अंदर जाकर उस ज्योत के दर्शन करते हैं उस नाम-शब्द को सुनते हैं। वहाँ न कौम का सवाल है न मजहब का सवाल है। चाहे हिन्दू सिक्ख, ईसाई कोई भी अंदर जाए सबके लिए परमात्मा का दरवाजा खुला है लेकिन हम अपने आप उस ज्योत के दर्शन नहीं कर सकते।

जैसे बच्चा घर में बैठकर ही कहे कि मैं एम.ए. पास हो जाऊँगा ऐसा नहीं हो सकता। उसे सोलह साल स्कूल में जाकर टीचरों की मदद प्राप्त करनी पड़ेगी। जिन महात्माओं ने इस चीज़ को हासिल किया उन्हें भी किसी महात्मा के दर पर अपनी गर्दन झुकानी पड़ी। गुरु नानक साहब कहते हैंः

*जिसदा गृह तिस दिया ताला, कुंजी गुरु सौंपाई।*
*अनिक उपाय करे नहीं पाए, बिन सतगुरु शरणाई।।*

यह घर परमात्मा ने बनाया है और उसने ही ताला लगाया है। यह ताला न गुरु नानकदेव जी ने, न कबीर साहब ने, न मौलाना रूम और न शम्स तबरेज ने लगाया है। आप मन-बुद्धि से जितने भी उपाय कर लें कभी भी कामयाब नहीं हो सकते। आप जब कुँजी वाले महात्मा के पास जाएँगे तब ही आप यह सब हासिल कर पाएँगे। यहाँ कौम, मजहब या मुल्क का सवाल नहीं।

कुँजी वाले महात्मा की यह निशानी है कि वह खुद अंदर जाता है और हमें अंदर जाने का भेद देता है। ऐसा महात्मा किसी समाज की निंदा नहीं करता। जो परमात्मा को याद करे परमात्मा उसी का है। आप परमात्मा की भक्ति करें अंदर जाकर परमात्मा से मिलाप करें। गुरु नानक साहब मिसाल देते हैंः

*मात-पिता बिन बाल न होए, बिंब बिना कैसे कपड़े धोए।*

जैसे माता-पिता के संजोग के बिना बच्चा पैदा नहीं हो सकता उसी तरह हम साबुन के बिना कपड़े साफ नहीं कर सकते। सन्तों के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं मिलती। सतसंग के बिना हमारी सोई हुई आत्मा जाग नहीं सकती और हमें हमारी गलतियों का पता नहीं चलता। महात्मा सतसंग में किसी की निंदा-आलोचना नहीं करते बल्कि वे कहते हैं कि उसे

आप सतसंग न कहें जहाँ किसी की निंदा की जाती है। सतसंग वह जगह है जहाँ नाम की महिमा और नाम का प्रचार होता है। आपके आगे तुलसी साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, यह शब्द बड़े ही ध्यान से सुनने वाला हैः

**दिल का हुजरा साफ कर जानां के आने के लिये।।**
**ध्यान ग़ैरों का उठा उसके बिठाने के लिये।।**

तुलसी साहब पुणे-सतारा के बादशाह के सबसे बड़े लड़के थे। तुलसी साहब ने पुणे-सतारा की गद्दी का वारिस बनना था। आपके पिता चाहते थे कि मैं इसे गद्दी सौंप दूँ और खुद भक्ति करूँ। आप बचपन से ही परमात्मा की भक्ति में लगे हुए थे। जब आपको तिलक देने की तैयारी की गई तो आप चुपचाप वहाँ से खिसक गए। आपने काफी समय जंगलों में अभ्यास किया। आखिरी वक्त आपने हाथरस जिला-अलीगढ़ में अपना सतसंग कायम किया। आपने अनेक जीवों को मालिक से मिलने का उपदेश दिया।

आपकी बहुत से समाज के लोगों के साथ बातचीत हुई। आपने हर एक को अच्छी तरह समझाया कि आप किस तरह परमात्मा से मिल सकते हैं? शेख तकी हज करके आया, उसकी मुलाकात आपके साथ हुई। शेख तकी ने कहा, ''जो एक बार हज कर ले उसका जन्म-मरण कट जाता है।'' मौहम्मद साहब का जन्म साऊदी अरब में हुआ उस जगह को हज कहते हैं। नामदेव जी कहते हैंः

*मुए होए जे मुक्ति देवोगे, मुक्ति न होय कोयला।*

हे गुरु! अगर आप हम मरें हुओ को मुक्ति देंगे तो हमें कैसे पता चलेगा कि हम मुक्त हुए हैं या नहीं? अगर शिष्य नाम लेकर कमाई करता है तो वह जीते जी भी देख सकता है अगर हम नाम

लेकर शब्द-नाम की कमाई नहीं करते, शराबों-कबाबों में लगे हुए है तो गुरु का क्या कसूर है? कबीर साहब कहते हैंः

*गुरु बेचारा क्या करे, जे सिक्खन में चूक।*
*अंधे एक न लग्गी, ज्यों वाँस बजाई फूक।।*

अब तुलसी साहब शेख तकी से कहते हैं, ''हज कौन सा है, कुरान के अंदर कौन से हज की महानता बताई गई है? वह हज पैरों के तलों से शुरू होकर सिर की चोटी पर जाकर मुक्कमल होता है। इसकी दो मंजिलें हैं पहली मंजिल आँखों तक है और दूसरी मंजिल आँखों के ऊपर हैं। फैले हुए ख्याल को जिक्र के जरिए सिमरन कह देते हैं, कुरान के अंदर इसको जिक्र करना कहते हैं। किसी चीज को बार-बार याद करने को जिक्र कहते हैं। आप जिक्र के जरिए अपने ख्याल को तीसरे तिल पर लाएं। यहाँ पर आकर आपका आधा हज हो जाएगा, शरीर में नीचे की ओर छह चक्र है ये सब तय हो जाएँगे।''

जब आँखों के पीछे आते हैं तो जिस सतगुरु ने नाम दिया है वह प्रकट हो जाता है। सतगुरु एक-एक करके सभी मंजिलों को पार करवाकर आत्मा को धुरधाम सच्चखंड ले जाता है। सतगुरु का इस दुनिया में भी साथ है और अगली दुनिया में भी साथ है। सतगुरु जब तक शिष्य को परमात्मा से मिला नहीं देते उतनी देर शिष्य को नहीं छोड़ते, यह सतगुरु का धर्म होता है। ऐसा नहीं कि कान में फूँक मारकर कहा कि मैं तेरा गुरु और तू मेरा शिष्य है।

अब तुलसी साहब शेख तकी से कहते हैं, ''तेरा वह हज कबूल नहीं किया जाएगा अगर तुमने हज करना है तो यह कर।'' सच्चे से सच्चा मंदिर, ठाकुर द्वारा हमारा शरीर है। हिन्दु महात्मा ने हमारी देह को नारायण के रहने की जगह कहा है। इस देह के

अंदर नारायण परमात्मा रहता है, अंदर से ही वह नारायण परमात्मा मिल सकता है और अंदर से ही आत्मा नारायण बन सकती है। मुस्लमानों ने इस देह को जिन्दा खुदा की मस्जिद कहकर बयान किया है। गुरु अमरदेव जी कहते हैंः

*हर मंदिर ऐहो शरीर है, ज्ञान रत्न प्रकट होए।*

गुरु महाराज ने इस देह को सच्चा मंदिर, हरि मंदिर कहकर बयान किया है कि यहाँ परमात्मा रहता है। हमने अपने हाथों-पैरों से जो मंदिर-मस्जिद बनाए हैं वहाँ पर हम जूते लेकर नहीं जाते शराब-मीट का तो सवाल ही पैदा नहीं होता और न ही हुक्का-बीड़ी पीते हैं। वहाँ धूप-बत्ती करते हैं लेकिन हमारी देह में जहाँ परमात्मा रहता है वहाँ पर हम कभी मीट डालते हैं कभी शराब पीते हैं बुरे कर्म करते हैं लेकिन हम परमात्मा से मिलना चाहते हैं।

आप सोचें! जहाँ नारायण रहता है उस जगह को तो हमने हड्डा-रेड़ी बनाया हुआ है। हड्डा-रेड़ी के पास से कोई गुजरता है तो बदबू आती है हम नाक बंद कर लेते हैं। हर महात्मा ने इन चीजों का खंडन किया है।

हिन्दुओं के सुगंध पुराण के 52 वे अध्याय में ब्रह्मा नारद को सारी बूटियों का ज्ञान दे रहे थे। वहाँ ब्रह्मा ने नारद से कहा कि यह एक ऐसी बूटी है जिसे सतयुग, त्रेता, द्वापर में कोई इस्तेमाल नहीं करेगा। कलयुग में लोग जप-तप, पूजा-पाठ बहुत करेंगे लेकिन इस बूटी का इस्तेमाल करने के कारण अपने सारे जप-तप का सत्यानाश कर लेंगे। अगर पंडित होकर इस बूटी का सेवन करेगा तो वह गाँव का सुअर बनेगा और जो लोग उसको दान देंगे वे भी सुअर बनेंगे, क्या पंडित इस पर अमल करते हैं, क्या वे लोगों को इसके बारे में बताते हैं?

मेरे पिछले गाँव में पंडितों का डेपूटेशन आया। उनसे कई बातें हुई और उनके साथ कई अच्छे-अच्छे हिन्दु भी आए थे, मैंने सबका स्वागत किया। उनकी बातें सुनी और उनकी बातें सुनकर मैंने एक सवाल किया, ''आपके सुंगध पुराण के 52 वे अध्याय में यह लिखा हुआ है?'' पंडित जी चुप और कहा, ''हाँ! लिखा हुआ है।'' जाट कहने लगे, ''पंडित जी! आपने हमें आज तक क्यों नहीं बताया? हम सभी हुक्कों की महफिल लगाते हैं।''

मैं एक दफा मांझूवास में सतसंग करने के लिए गया। वहाँ पर उन्होंने 40-50 हुक्के लाकर रख दिए। उनके हुक्के देखकर मैं घबराया कि मैं तो इन चीजों के प्रचार से बचने के लिए कहने आया हूँ लेकिन यह क्या है? गाँव के लोगों ने कहा, ''महाराज जी! अगर हुक्के नहीं पिएंगे तो लोग सतसंग सुनने नहीं आएँगे।'' तब मैंने कहा, ''आप लोग सतसंग सुनें और सुधरें।'' आखिर तब उन लोगों को पता लगा कि सतसंग क्या चीज़ है।

महात्मा हमें समझाने के लिए आते हैं कि बाहर से ख्याल को हटाकर अंदर जाएं। तुलसी साहब शेख तकी से कहते हैं कि तू सबसे पहले उस मंदिर-गुरुद्वारे को साफ कर जहाँ परमात्मा ने प्रकट होना है, जहाँ तू परमात्मा को बिठाना चाहता है। गंदी जगह तो कुत्ता भी नहीं बैठता, हम खुद भी बैठने को तैयार नहीं होते।

इस जगह पर जहाँ आपने बैठना होता है आप पहले इस जगह की साफ-सफाई करते हैं कि जगह अच्छी बन जाए। परमात्मा सबसे ऊँचा और सबसे पवित्र सच्चखंड का रहने वाला है वह हम शराबियों-कबाबियों और बीड़ी पीने वालों के अंदर कैसे प्रकट हो सकता है? तुलसी साहब कहते हैं, ''हे शेख तकी! सबसे पहले उस जगह को साफ कर जहाँ तू परमात्मा को बिठाना चाहता है। हर

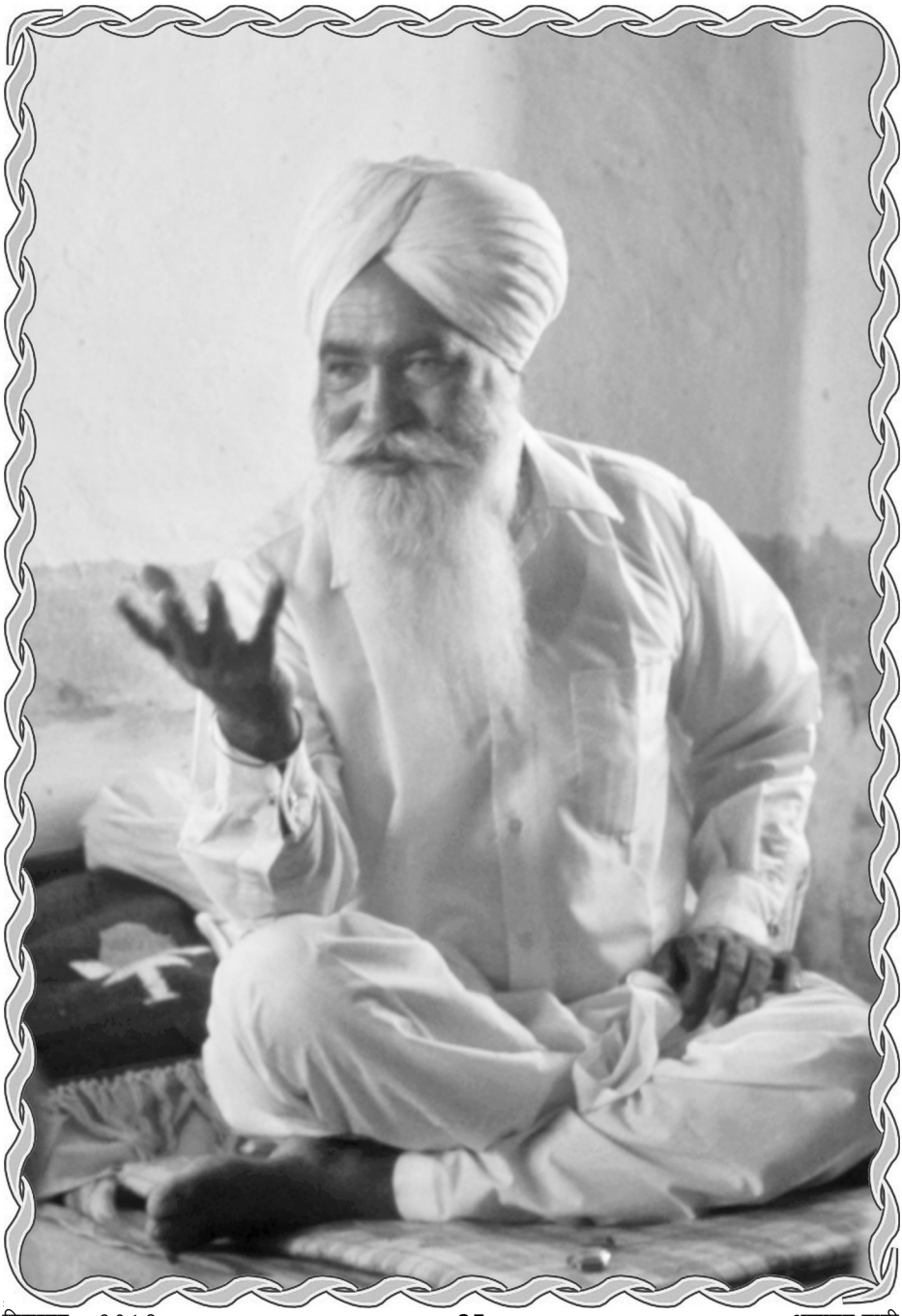

जाति उस परमात्मा की है। हर एक के साथ प्यार कर, वह परमात्मा सबके अंदर बैठा है, वह हर एक से प्यार करता है किसी के लिए बुरा न सोचें।'' शेख फरीद कहते हैंः

*जे तू परियाँ दी सिक्ख हयायो ने ठहाई कहीं दा।*

अगर परमात्मा से मिलने का शौंक है तो किसी का दिल न दुखा, किसी की निंदा न कर। सबको परमात्मा ने बनाया है अगर कोई ऐब करता है तो उसे परमात्मा सजा देगा। किसी की जान लेने का फैसला परमात्मा ही कर सकता है, सबकी डोर परमात्मा के हाथ में है। अगर हम किसी की जान लेने का फैसला करते हैं तो उसी तरह वह भी हमारी जान लेगा।

गुरु ग्रंथ साहब में सदना कसाई की कहानी आती है कि सदना बादशाह का कसाई था, वह बकरों का कत्ल करता था। कोई ऐसा वक्त आया कि बादशाह को रात को मीट की जरूरत पड़ी। सदना कसाई को संदेश भेजा। सदना कसाई ने सोचा कि गर्मी के दिन हैं अगर मैंने बकरा अभी काटा तो इस माँस में से बदबू आएगी, यह सारा माँस बेकार चला जाएगा। उसने सोचा कि इस बकरे का गुप्त अंग काट लूं। जब वह बकरे का गुप्त अंग काटने गया तो बकरा कह-कहाकर हँसा।

जब बारिश होनी होती है तो आसमान में बादल हो जाते हैं इसी तरह जब कोई अच्छा समय आता है तो आकाशवाणी होने लग जाती है। बकरे का बोलना कोई बड़ी बात नहीं थी। बकरा कह-कहाकर हँसा। सदने का दिल परेशान हुआ उसने बकरे से पूछा, ''तू हँस क्यों रहा है?'' बकरे ने कहा, ''पहले कई जन्मों में तुमने मेरा सिर काटा और मैंने तेरा सिर काटा। अब तू यह नई भाजी बना रहा है मैं आठ पहर तड़प-तड़पकर मरूँगा फिर जब मैं तुझे

मारूँगा तो तुझे भी आठ पहर तड़पना पड़ेगा।'' बकरे के मुँह से यह सुनकर सदना कसाई ने कसाई वाला काम ही छोड़ दिया।

सदना, सन्तों के पास गया उसने नाम लिया और नाम की कमाई की। गुरु ग्रंथ साहब में सदना कसाई का शब्द आता है कि वह परमगति को प्राप्त हुआ। इस कहानी को पढ़ने वाले, गुरुग्रंथ साहब को मानने वाले क्या किसी व्यक्ति या पशु को मार सकते हैं? जो लोग पशुओं को मारते हैं और बकरों को अपनी खुराक बनाते हैं क्या वे गुरु ग्रंथ साहब पर अमल करते हैं?

गुरु ग्रंथ साहब उनका है, गुरु नानक उनका है जो गुरु नानक की तालीम को मानते हैं उनकी तालीम पर अमल करते हैं। आप उस जगह को साफ करें जहाँ परमात्मा को बिठाना चाहते हैं। दुनिया का कूड़ा-कचरा निकाल कर बाहर फेंक दें ताकि परमात्मा-खुदा आपके अंदर बस सके।

**चशमे दिल से देख यहाँ जो जो तमाशे हो रहे।।**
**दिलसितां क्या क्या हैं तेरे दिल सताने के लिये।।**

तुलसी साहब कहते हैं, ''अंदर की आँखें खोलकर देख! परमात्मा ने तेरे अंदर किस प्रकार की रोशनियाँ और खंड-ब्रह्मांड रखे हुए हैं।'' महात्मा पीपा कहते हैंः

*जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे, जो खोजे सो पावे।*
*पीपा परम व परम तत्व है सतगुरु होय लखावे।।*

आप अंदर जाएं और खोजें लेकिन आप यह सब सतगुरु के बिना प्राप्त नहीं कर सकते।

**एक दिल लाखों तमन्ना उस पै और ज्यादा हविस।।**
**फिर ठिकाना है कहाँ उसके टिकाने के लिये।।**

तुलसी साहब कहते हैं, ''हे शेख तकी! दुनियादार तृष्णा में फँसे हुए हैं। न इनकी तृष्णाएँ पूरी होती हैं और न ही ये नाम की तरफ आते हैं। इंसान कचनार का फूल था लेकिन हवस ने इसे बर्बाद कर दिया इसी कारण यह परमात्मा से दूर है। ज्यादातर पिछली आयु में हवस जाग जाती है। दिल एक है चाहे आप इसे परमात्मा की भक्ति में लगाएं चाहे इसे दुनिया की ख्वाहिशों में लगाएं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

*जिसको कछु न चाहिए सो ही शहन्शाह।*

इंसान की ख्वाहिशें, तृष्णाएं इसे कंगाल कर देती हैं। एक तृष्णा में से दूसरी तृष्णा जन्म लेती है।

**नक़ली मन्दिर मसजिदों में जाय सद अफसोस है।**
**कुदरती मसजिद का साकिन दुख उठाने के लिये।।**

तुलसी साहब शेख तकी से कहते हैं, ''मुझे अफसोस से कहना पड़ रहा है कि तू नक़ली मंदिर-मस्जिद में तो रोज जाता है। जिन मंदिर-मस्जिदों को हमने अपने हाथ-पैरों से बनाया है ये नकली हैं। कुदरत ने जो मंदिर-मस्जिद बनाई है वह इंसान का शरीर है। वहाँ खुद परमात्मा बैठा है अगर तू वहाँ जाए तो तेरे जन्म-मरण का चक्कर सदा के लिए कट जाएगा।''

**कुदरती काबे की तू महराब में सुन गौर से।।**
**आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिये।।**

आप कहते हैं, ''मक्के की मस्जिद को काबा कहते हैं। मस्जिद का महराब इंसान के माथे के साथ मिलता-जुलता है। तू इस शरीर के अंदर जाकर देख मालिक की दरगाह से आवाज उठ रही है और यह आवाज हर एक के माथे पर आ रही है। यह

आवाज जन्म से लेकर मरण तक हर एक के अंदर है। अगर हमारे अंदर यह आवाज न हो तो हमारी मृत्यु हो जाएगी। तू अंदर जाकर उस परमात्मा की आवाज को बड़े ही ध्यान से सुन।''

**क्यों भटकता फिर रहा तू ऐ तलाशे यार में।।**
**रासता शाहरग में है दिलबर पै जाने के लिये।।**

अब तुलसी साहब शेख तकी से कहते हैं, ''तू क्यों परमात्मा की तलाश में मारा-मारा फिर रहा है, तू कहाँ समुंद्र पार करके चला गया और किस तरह बाहर रोज बाँगे दे रहा है? परमात्मा के पास जाने का रास्ता तेरे अंदर शाहरग है। मौहम्मद साहब अपनी पवित्र किताब में लिखते हैं अगर खुदा से मिलना चाहते हैं तो किसी मुर्शिद के पास जाएं, वह शाहरग का रास्ता खोल देगा।

वैसे तो हमारे शरीर में बहुत सी नाड़ियां हैं, इनमें चौबिस नाड़ियां बड़ी हैं लेकिन उनमें से तीन नाड़ियां ईड़ा, पिंगला और सुखमना को ज्यादा महान बयान किया गया है। सुखमना वह नाड़ी है जिसे कुरान शरीफ में शाहरग कहा गया है। गुरु नानकदेव जी ने उसे सुखमन नाड़ी कहा है। आप कहते हैं:

*पूरे गुरु की सच्ची बानी, सुखमन अंदर सहज समाणी।*

आप सुखमन नाड़ी के अंदर जाएं वहाँ बानी प्रकट हो जाएगी। वहाँ आप मीठे से मीठा और प्यारे से प्यारा शब्द सुनेंगे तो आपके मन को तसल्ली हो जाएगी।

*राम नाम मन बेध्या अवर की करे विचार।*

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जो मन हिरन की तरह भटक रहा था वह शब्द नाम की आवाज सुनकर बंध गया है। आप क्यों बाहर भटक रहे हैं? परमात्मा आपके अंदर आपकी इंतजार में है।''

**मुरशिदे कामिल से मिल सिदक और सबूरी से तक़ी।।**
**जो तुझे देगा फ़हम शाहरग के पाने के लिये।।**

अब तुलसी साहब शेख तकी से कहते हैं, ''सबसे पहले मुर्शिद-गुरु से मिल। ऐसे नहीं की दो मिनट मुर्शिद से मिला दो वचन सुने और बनिए की तरह धोती झाड़कर घर चला गया। जब तेरे अंदर सच्चा प्यार-सच्चा इश्क होगा कि तुझे परमात्मा से मिलना है तो तुझे मुर्शिद शाहरग का रास्ता बताएगा, परमात्मा बेइंसाफ नहीं।''

जब सन्त हमारे ख्याल को देखते हैं कि अब यह नाम लेने के लिए तैयार है तो वह अपनी दात मुफ्त लुटाते हैं। जिस तरह परमात्मा हर एक को सूरज की रोशनी, हवा और पानी मुफ्त देता है उसी तरह महात्मा भी अपनी तालीम की कोई फीस नहीं लगाते। कबीर साहब कहते हैं:

*नाम रतन धन कोठरी खान खुली घट माहे।*
*सेत मेत ही देत हूँ ग्राहक कोई नाहें।।*

**गोशे बातन हो कुशादा जो करे कुछ दिन अमल।।**
**ला इलाह अल्लाहू अकबर पै जाने के लिये।।**

अब आप कहते हैं, ''देख शेख तकी! मैं तुझे एक और पते की बात बताता हूँ कि तू रास्ता लेकर नाम की कमाई कर।'' डॉक्टर से दवाई लाकर अलमारी में रखने से फायदा नहीं होता, उस दवाई को खाना है और डॉक्टर जो परहेज बताता है वह परहेज जरूर करना है फिर दवाई फायदा न करे तो हम डॉक्टर को दोष दे सकते हैं। हम दवाई लाकर खाएंगे तो ही फायदा होगा।

मैं अपनी जिन्दगी का वाक्या बताया करता हूँ कि जब मैं आर्मी में था मुझे मलेरिया हो गया। आर्मी में मलेरिया को डॉक्टर

बड़ी ही गंभीरता से लेते है क्योंकि यह छूत की बीमारी है। आर्मी में कुनैन खिलाई जाती है, कुनैन बहुत गर्म होती है। वे मुझे कुनैन की दो गोलियां रोज दे जाते थे। मैं वह गोलियां बिस्तर के तकिए के नीचे रख देता, मेरा बुखार बढ़ता गया। हमारा फौजी कर्नल जो सिविल सर्जन था वह रोज आकर देखता था। एक दिन उसने छोटे डॉक्टर से कहा कि इनका बुखार क्यों नहीं टूट रहा? इनका तकिया चेक करें। मुझे पता नहीं था कि मेरी चोरी पकड़ी जाएगी।

जब उन्होंने तकिया उठाया तो तकिए के नीचे से कम से कम 15 दिनों की गोलियाँ निकल आई। सिविल सर्जन ने हुक्म दिया कि इनके मुँह में गोलियाँ डाली जाएं। जितने भी मलेरिया वाले थे सबको ऐसे ही खड़ा करके उनके मुँह में गोलियाँ डाली गई।

इसी तरह जिन सन्त-सतगुरु ने हमें नाम दिया है वे हमें जरुर तारते हैं, उन्होंने हमारी जिम्मेवारी ली है। अगर हम अच्छी सहूलियतें होने पर भी भजन-सिमरन नहीं करते तो वह और भी तरीका अख्तियार कर लेते हैं। वह बेलिहाज ताकत है। उन्होंने खुद अभ्यास किया होता है। शेख तकी! अगर कुछ दिन बैठकर नाम का अभ्यास करेगा तो तेरे अंदर के कान खुल जाएँगे तू पहली मंजिल पर उस अकबर बड़े परमात्मा के पास पहुँच जाएगा।

**यह सदा तुलसी की है आमिल अमल कर ध्यान दे।।**
**कुन कुराँ में है लिखा अल्लाहु अकबर के लिये।।**

तुलसी साहब कहते हैं कि मैं खुद अमल करता हूँ, मैंने अपनी जिन्दगी में किया भी है। मैंने अपने अंदर उस अकबर परमात्मा को पाया है। क्या आपकी पवित्र किताब में यह नहीं लिखा कि अंदर जाकर खुदा से मिल सकते हैं? वह खुदा परमात्मा,

वाहेगुरु हमारे अंदर है। जिसको भी मिला अंदर से ही मिला है और जिसे मिलेगा उसे भी अंदर से ही मिलेगा। कबीर साहब कहते हैंः

***साधु ऐसा चाहिए साची कहे बनाये, चाहे टूटे चाहे रहे बिन कहया भ्रम न जाए।।***

अब आप शेख तकी का अंदर से भ्रम निकालना चाहते थे कि यह इतनी दूर मुझसे मिलने आया है इसका भ्रम निकल जाए। साधु यह नहीं सोचते कि यह नाराज होगा या खुश होगा। हम सतसंग सुनते हैं एक दिन हमें सतसंग अच्छा नहीं लगेगा, दूसरे दिन अच्छा नहीं लगेगा अगर हम लगातार सतसंग सुनते रहेंगे तो हमारा मन मान जाएगा। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

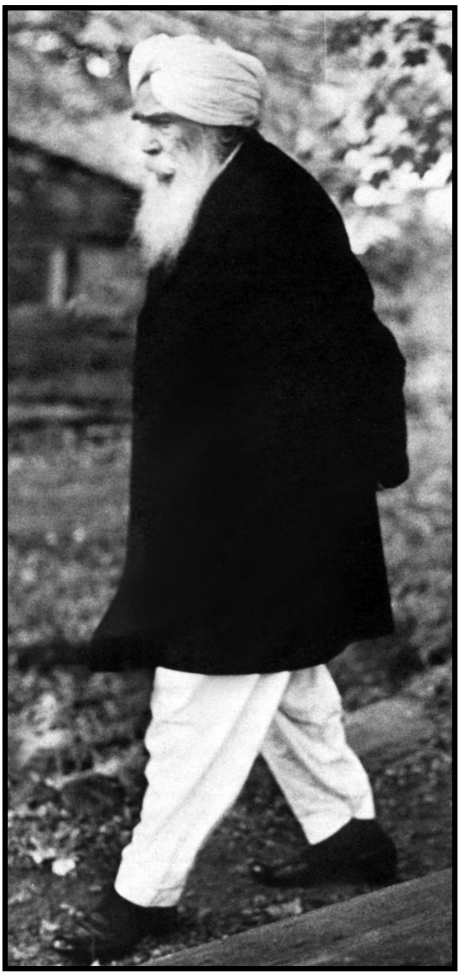

***लग्या रहेंगा संग में गुरु के सहज***
***सहज शायद मन मान।***

मैल लगी है अगर हम स्क्रबर लगाते रहेंगे तो मैल जरूर साफ हो जाएगी। महात्मा तो सबको अच्छी बात ही कहते हैं लेकिन हमारे बुरे कर्म हमें सतसंग पर अमल नहीं करने देते।

तुलसी साहब ने अपनी बानी में जो बताया है हमें भी चाहिए कि हम उस पर अमल करें और अपने जीवन को पवित्र बनाएं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

# अमृतवेला

सतगुरु अभूल होते हैं। सतगुरु कभी भी नामदान देते हुए गलती नहीं करते। परमात्मा इंसान के रूप में इस संसार में आता है। बुल्लेशाह कहते हैं:

*मौला आदमी बन आया।*

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''अब उस परमात्मा का नाम ही रामदास पड़ गया है।'' मैंने भी परमात्मा कृपाल के जीवनकाल में एक भजन बोला था:

*रब बन्दा बनके आया, आके जग जगाया।*

सन्त-सतगुरु नामदान देते हुए हमारे अंदर इस किस्म का इंतजाम कर देते हैं कि हम प्रालब्ध कर्मों का हिसाब-किताब भी चुकाते रहते हैं और अंदर तरक्की भी करते रहते हैं। जो शिष्य सतगुरु के हुक्म की पालना करते हुए सुस्ती करता है वह खुशी और गमी का शिकार होता रहता है। जो शिष्य सतगुरु का हुक्म प्यार-भरोसे से मानता है उसे शान्ति का धन प्राप्त हो जाता है।

कोई भी माता अपने बच्चे को दुखी देखकर खुश नहीं होती बच्चे को पता नहीं कि कौन सी बात उसके फायदे की है? कई बार माता बच्चे को कड़वी दवाई भी लाकर देती है। हम जब तक नौं द्वारों में बैठे हैं, हम रोगी हैं।

सतगुरु हमें वही चीज़ देता है जो हमारे लिए फायदेमंद है। हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए मेहनत करके अंदर जाना चाहिए; सतगुरु दिन-रात हमारे ऊपर रहमत कर रहा है।

बड़ा सुहावना मौका है। हमें इस मौके से पूरा फायदा उठाना चाहिए। हमने मन को शान्त करना है, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना प्रेम-प्यार से करना है। बाहर की किसी आवाज की तरफ ध्यान नहीं देना, मन को बाहर भटकने नहीं देना तीसरे तिल पर एकाग्र करना है क्योंकि हमारे घर का दरवाजा तीसरा तिल है। हमारे सफर की शुरूआत यहीं से होती है। हाँ भई! बैठो।

15.01.1986

***

## धन्य अजायब

## मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

**भूरा भाई आरोग्य भवन,**

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर टाकीज)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067

98 33 00 40 00, व 022–24 96 50 00

8 जनवरी से 12 जनवरी 2020

## 16 पी.एस. रायसिंहनगर आश्रम में सतसंग का कार्यक्रम :

02 से 06 फरवरी 2020